संख्या-471/2025/2052/22-2-2024-17(598)/2024

प्रेषक,

शिव गोपाल सिंह
संयुक्त सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

पुलिस महानिदेशक/महानिरीक्षक,
कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2 लखनऊ: दिनांक 14 मई, 2025

विषय:- केन्द्रीय कारागार, वाराणसी में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी दयाशंकर सिंह पुत्र श्री जगन्नाथ सिंह, निवासी जनपद-सुलतानपुर की फार्म-ए/लाइसेंस के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक उप महानिरीक्षक (मु0), कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें, उ0प्र0 के पत्र संख्या-34726/प्रोबेशन-3-फार्म-ए/(एम-08.11.2024), दिनांक 19.11.2024 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- उक्त पत्र द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार केन्द्रीय कारागार, वाराणसी में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी दयाशंकर सिंह पुत्र श्री जगन्नाथ सिंह जो ग्राम-रवनिया पश्चिम, थाना-कुड़वार, जनपद-सुलतानपुर का निवासी है। पुरानी रंजिश के कारण बंदी ने दिनांक 18.12.1997 को अपने 03 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर चाकू से वारकर व कट्टा से गोली मारकर महेन्द्र प्रसाद नामक व्यक्ति की हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-167/1998, भा0द0वि0 की धारा-302/34 में मा० अपर सत्र न्यायाधीश/एफ०टी०सी० तृतीय कक्ष सं०-12 सुलतानपुर के आदेश दिनांक 02.12.2010 द्वारा आजीवन कारावास से दण्डित किया गया। (2) एसटी नं0-85/2006 व 12/2006, भा0द0वि0 की धारा-147, 148, 307/149, 364, 323/149, 506 व 3(1) उ०प्र० गैंगेस्टर एक्ट व 3/25 आर्म्स एक्ट में मा० अपर सत्र न्यायाधीश कक्ष सं०-05/ विशेष न्यायाधीश गैंगेस्टर एक्ट, फैजाबाद द्वारा 08 वर्ष एवं अर्थदण्ड रू0-22000/- के व्यतिकम में 04 माह 21 दिन अतिरिक्त कारावास से दण्डित किया गया, मूल सजा समाप्त अर्थदण्ड की सजा शेष है। बंदी ने दिनांक 04.09.2024 तक अपरिहार 14 वर्ष, 10 माह, 15 दिन तथा सपरिहार 17 वर्ष, 07 माह, 12 दिन की सजा पूरी कर ली है।

जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट, सुलतानपुर द्वारा शासनादेश संख्या 1658/22-02-2004-25(94)/97, दिनांक 06.09.2004 के प्रस्तर 9-(2) के प्राविधान के अनुरूप 05 बिन्दुओं (जो लक्ष्मण नास्कर बनाम यूनियन ऑफ इंडिया, 2000 कि० एल० जे० 1471 में मा० उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्देशित किया गया) पर परीक्षण कर आख्या प्रेषित की गई है। उक्त आख्या में बन्दी द्वारा हत्या जैसा जघन्य अपराध कारित किया गया है जिससे बन्दी के निवास ग्राम व आस-पास के लोगों में अभी भी डर व भय व्याप्त होने, भविष्य में अपराध करने में अशक्त नहीं होने, समयपूर्व रिहा किये जाने से पुनः बन्दी द्वारा जघन्य अपराध किये जाने की सम्भावना होने का अंकन करते हुए समयपूर्व रिहाई की संस्तुति नहीं की गयी है।

शासनादेश संख्या-1292/22-02-2012-19जी/2012, दिनांक 02 नवम्बर, 2012 में दी गई व्यवस्था के प्रक्रिया के अनुसार प्रोबेशन बोर्ड द्वारा सिद्धदोष बंदी दयाशंकर सिंह पुत्र जगन्नाथ सिंह की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई पर विचार-विमर्श किया गया। प्रकरण में पुरानी रंजिश के कारण बंदी ने दिनांक

1- यह शासनादेशइलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.gov.in से सत्यापित की जा सकती है।

18.12.1997 को अपने 03 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर चाकू से वारकर व कट्टा से गोली मारकर महेन्द्र प्रसाद नामक व्यक्ति की हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा स्थानीय स्तर पर वर्तमान परिस्थितियों का सम्यक परीक्षण कर माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में समयपूर्व रिहाई का विरोध किया गया है। प्रकरण से सम्बंधित ऐसा कोई तथ्य परिलक्षित नही है, जिसके आधार पर जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक तथा जिला मजिस्ट्रेट की आख्या / संस्तुति के प्रतिकूल अवधारणा बनाई जा सके। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता एवं जघन्यता के दृष्टिगत प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट-1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बंदी दयाशंकर सिंह पुत्र जगन्नाथ सिंह को फार्म-ए/ लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है।

3- अतः उपरोक्त वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि केन्द्रीय कारागार, वाराणसी में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी दयाशंकर सिंह (बन्दी संख्या-09/2024) पुत्र श्री जगन्नाथ सिंह, निवासी जनपद-सुलतानपुर की यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज ऑन प्रोबेशन एक्ट-1938 की धारा-2 के प्राबिधानों के अन्तर्गत सम्यक विचारोपरान्त उसे मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी के लाईसेन्स पर मुक्ति मा0 राज्यपाल महोदया द्वारा अस्वीकार कर दी गयी है। तद्नुसार उसके फार्म-ए/लाईसेंस पर शासन का आदेश अंकित करके एतदद्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नकः यथोपरि।

(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,
शिव गोपाल सिंह
संयुक्त सचिव।

संख्या-471/2025/2052(1)/22-2-2024-17(598)/2024,तद्दिनांकित।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1- जिला मजिस्ट्रेट, सुलतानपुर।
2- वरिष्ठ अधीक्षक, केन्द्रीय कारागार, वाराणसी।
3- निजी सचिव, मा0 मंत्री, कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग, उ0प्र0 शासन को मा0 मंत्री जी के सूचनार्थ।
4- निजी सचिव, मा0 राज्यमंत्री, कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग, उ0प्र0 शासन को मा0 मंत्री जी के सूचनार्थ।
5- नोडल अधिकारी/अधीक्षक, जिला कारागार, गाजियाबाद को मा0 उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली में योजित विशेष अनुज्ञा याचिका (क्रि0) संख्या-529/2021 सोनाधर बनाम छत्तीसगढ़ राज्य तथा सुओ मोटो रिट पिटीशन (क्रि0) संख्या-04/2021 पॉलिसी स्ट्रेट्जी फार ग्रान्ट ऑफ बेल में मा0 उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली द्वारा पारित आदेश दिनांक 10.09.2024 के संदर्भ में।
6- गार्ड फाइल।

आज्ञा से,
ममता श्रीवास्तव
अनु सचिव।

1- यह शासनादेशइलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.gov.in से सत्यापित की जा सकती है।

शासनादेश संख्या-471/2025/2052/22-2-2024-17(598)/2024

दिनांकः 14 मई, 2025 का संलग्नक

सरकार के आदेश

केन्द्रीय कारागार, वाराणसी में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी दयाशंकर सिंह पुत्र श्री जगन्नाथ सिंह जो ग्राम-रवनिया पश्चिम, थाना-कुड़वार, जनपद-सुलतानपुर का निवासी है। पुरानी रंजिश के कारण बंदी ने दिनांक 18.12.1997 को अपने 03 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर चाकू से वारकर व कट्टा से गोली मारकर महेन्द्र प्रसाद नामक व्यक्ति की हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-167/1998, भा0द0वि0 की धारा-302/34 में मा० अपर सत्र न्यायाधीश / एफ०टी०सी० तृतीय कक्ष सं०-12 सुलतानपुर के आदेश दिनांक 02.12.2010 द्वारा आजीवन कारावास से दण्डित किया गया। (2) एसटी नं0-85/2006 व 12/2006, भा0द0वि0 की धारा-147, 148, 307/149, 364, 323/149, 506 व 3(1) उ०प्र० गैंगेस्टर एक्ट व 3/25 आर्म्स एक्ट में मा० अपर सत्र न्यायाधीश कक्ष सं०-05/ विशेष न्यायाधीश गैंगेस्टर एक्ट, फैजाबाद द्वारा 08 वर्ष एवं अर्थदण्ड रू0-22000/- के व्यतिकम में 04 माह 21 दिन अतिरिक्त कारावास से दण्डित किया गया, मूल सजा समाप्त अर्थदण्ड की सजा शेष है। बंदी ने दिनांक 04.09.2024 तक अपरिहार 14 वर्ष, 10 माह, 15 दिन तथा सपरिहार 17 वर्ष, 07 माह, 12 दिन की सजा पूरी कर ली है।

जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट, सुलतानपुर द्वारा शासनादेश संख्या 1658/22-02-2004-25(94)/97, दिनांक 06.09.2004 के प्रस्तर 9-(2) के प्राविधान के अनुरूप 05 **बिन्दुओं (जो लक्ष्मण नास्कर बनाम यूनियन ऑफ इंडिया, 2000 कि० एल० जे० 1471 में मा० उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्देशित किया गया) पर परीक्षण कर आख्या प्रेषित की गई है। उक्त आख्या में बन्दी द्वारा हत्या जैसा जघन्य अपराध कारित किया गया है जिससे बन्दी के निवास ग्राम व आस-पास के लोगों में अभी भी डर व भय व्याप्त होने, भविष्य में अपराध करने में अशक्त नहीं होने, समयपूर्व रिहा किये जाने से पुनः बन्दी द्वारा जघन्य अपराध किये जाने की सम्भावना होने का अंकन करते हुए समयपूर्व रिहाई की संस्तुति नहीं की गयी है।**

शासनादेश संख्या-1292/22-02-2012-19जी/2012, दिनांक 02 नवम्बर, 2012 में दी गई व्यवस्था के प्रक्रिया के अनुसार प्रोबेशन बोर्ड द्वारा सिद्धदोष बंदी दयाशंकर सिंह पुत्र जगन्नाथ सिंह की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई पर विचार-विमर्श किया गया। प्रकरण में पुरानी रंजिश के कारण बंदी ने दिनांक 18.12.1997 को अपने 03 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर चाकू से वारकर व कट्टा से गोली मारकर महेन्द्र प्रसाद नामक व्यक्ति की हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा स्थानीय स्तर पर वर्तमान परिस्थितियों का सम्यक परीक्षण कर माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में समयपूर्व रिहाई का विरोध किया गया है। प्रकरण से सम्बंधित ऐसा कोई तथ्य परिलक्षित नही है, जिसके आधार पर जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक तथा जिला मजिस्ट्रेट की आख्या / संस्तुति के प्रतिकूल अवधारणा बनाई जा सके। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता एवं जघन्यता के दृष्टिगत प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट-1938 **की धारा-**2 **के अन्तर्गत सिद्धदोष बंदी दयाशंकर सिंह पुत्र जगन्नाथ सिंह को फार्म-ए/ लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है।**

उक्त के दृष्टिगत सम्यक विचारोपरान्त मा0 राज्यपाल महोदया द्वारा बंदी की फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर समयपूर्व रिहाई अस्वीकार कर दी गयी है।

शिव गोपाल सिंह
संयुक्त सचिव।

1- यह शासनादेशइलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.gov.in से सत्यापित की जा सकती है।